शिवरात्री पूजा



वटुकनाथ पूजा



ॐ ॐ

ॐ ॐ

शिवरात्री पूजा



वटुकनाथ पूजा



"Geetanjali"
B-X/6, Dalhousie Road, Pathankot-145 001
Tel. : 0186-20213

दो शब्द

शिवरात्री कश्मीरी पंडितों का पावन पर्व है यह पर्व महत्वपूर्ण और कश्मीरी पंडित परिवार के हेतु उत्कृष्ट एवं महत्वपूर्ण है। शिवरात्री के इस पावन पर्व पर प्रत्येक पंडित घर में वटुख देवता की पूजा होती आई है। यह पूजा प्रत्येक घर के कुल ब्राह्मण द्वारा होती थी, समस्त रात्रि पूजा में व्यतीत होती थी, ब्रह्मा जी जिस समय आते, उन की प्रतिक्षा होती रहती थी, वटुक पूजा के पश्चात वटुकनाथ एवं भैरव आदि गणों को भोग लगा कर फिर परिवार के सदस्य एंव अन्य निमंत्रित जन अन्न खाते थे, कभी-कभी प्रातः चार पाँच बजे प्रसाद खाने की घड़ी आती थी। जैसा मैने अपने घर में देखा है।

हमारे घर के वरिष्ठ सदस्य हमारे पिताजी वटुक पूजा का पूर्ण ज्ञान रखते थे, 1967 से हमारे घर में उन्होनें शिवरात्री पूजा स्वयं करनी आरम्भ की क्योंकि कुल ब्राह्मण का आना सम्भव नही हो सका, पठानकोट में ईश्वर स्वरुप स्वामी लक्ष्मण जी के अनुग्रह की छाप एक मकान के रूप में हमारे परिवार पर लगी और उनकी चरण रज एंव यज्ञाहुति से इस घर का उद्घाटन हुआ और

यज्ञ के साथ-साथ ही शिवरात्री पर्व का आगमन भी हुआ। मुझको अपने स्वर्गीय शास्त्रादक्ष्य ससुर जी ने वटुख पूजा की सरलतम विधि एंव मन्त्र लिखवाये और सिखाये, जिन का प्रयोग मैं इतने वर्षो से स्वयं करती रही हुँ।

कश्मीर भूमि की अन्यवरिथत परिस्थिति के कारण यत्र-तत्र ठहरे हुए कश्मीरी परिवारों की शिवरात्री पूजा का ध्यान करते हुये अतः कुलब्राह्मणों की अनुपस्थिति को दृष्टि में रखते हुये, मैने यह शिवरात्री पूजा की सरलतम विधि छाप कर अपनी बिरादरी को सोंपने का निश्चय किया ताकि घर-घर में वटुक पूजा मेरे भाई एंव मेरी बहनें स्वयं कर सकें और पूजा का शुभफल प्राप्त कर लें। मुझे इस बात का विश्वास ही नही पूर्ण विश्वास है कि बिरादरी की श्रदेय शास्त्र विभूतियाँ मेरे इस प्रयास की त्रुटियों को क्षमा दान दें कर मुझे कृतार्थ करेंगी यह सोच कर कि मैंने अपने प्रयोग की चीज अपने भाई बहनों में वितरण करने की चेष्टा की और कुछ नही।

राज दुलारी कौल
गीतांजली पठानकोट

ॐ नमः शिवाय

सामग्री एकत्र होने तक श्रदा से ॐ नमः शिवाय मन्त्र पढ़ते रहे

भद्र पीठ या थाली से सन्यपुतुल या शिवलिंग रख कर नारिकचुल या खासु से जल डाल कर पढ़े।

अस्य श्री आसनशोधन मंत्रास्य मेंरुपृष्ठ श्रृषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन शोधने विनियोगः

पृथ्वी माता को तिलक, फूल, चावल चढ़ा कर पढ़े

प्री पृथिव्यै आधार शक्त्यै संमालभनं गन्धों नमः अर्धो नमः, पुष्पं नमः

हाथ जोड कर पढ़ें

**पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विषणुना धृता।
त्मं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम।।**

दर्भ के दो तिनके अणामिका अंगुलियों में रख गणेश जी का ध्यान करते हुए पढ़ें

1. शुकलाम्बर धरं विष्णुं–शशिवर्ण चर्तुभुजम।
प्रसन्न वदनं ध्याये–सर्वविध्नों पंशान्तय ।।
अभिप्रीतार्थ सिद्धर्यथं–पूजितोयः सुरैरपि ।
सर्व विध्नच्छिदे तस्मै–श्री गणाधिपतये नमः।।

2. कर्पुर गौरं करुणावतारं,
संसारसारं भुजगेन्द्रहारम।
सदा रमन्तम हृदयार बन्दे,
भवम भवानी सहितं नमामि ।।

3. गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु साक्षात महेश्वरः।
गुरुरेव जगत सर्वम, तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

गुरुवे नमः, परम गुरुवे नमः, परमेष्ठ गुरुवे नमः।
परमाचार्य नमः, आदि सिद्धेम्यो नमः।।

यजमान को तिलक लगा कर पढ़िए

मन्त्रर्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः शत्रुणां बुद्धि नाशोऽस्तु, मित्रनामु दयस्तव, आयु रारोऽयम, एश्वर्यम एतित्रतयमस्तु ते जीवत्वं शरदश्शतम

अपनी मध्यमा अंगुली से अपने आप को तिलक और पुष्प लगा कर पढ़े

परमात्मने परुषोतमाय, पंचभूतात्मकाय, विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मणे नारायणाय आधार शक्तयै सभालभनं गन्धों नमः, अर्धों नमः पूष्पं नमः

द्वीप द्वचोग को तिलक, अक्षत और पुष्प चढ़ावे

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः, प्रसीद मम गोविन्द, दीपोयम परिकल्पितः

धुप को तिलक अर्ध तथा पुष्प चढ़ाते हुए पढ़े

वनस्पति रसो, दिव्यो गन्धाढ़्यो, गन्ध उत्तमा आह्यनं सर्वदेवानां, धूपोऽम प्रतिगृह्यताम।

सूर्य देवता का निर्माल थाल में अर्ध चावल फूल चढ़ा कर पढ़े

नमो धर्म निधानाय । नमा स्वकृत साक्षिणे नमः प्रत्यक्ष देवाय, भासकराय नमो नमः ।

दर्भ के विष्टर को खासू में डाल कर सत्रपूतलो पर जल डाल कर पढ़े

यत्ररस्ति माता न पिता न बन्धु, भ्रात्रपि नो यत्र सुहजनश्च । न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिस्तत्रत्म दीपं शरणं प्रपधे, आत्मने नारायणाय आधार शक्तयै धूप धीप संकल्पाति् सिद्धीरस्तु, धूपों नमः धीपो नमः ।

उों तत्सद ब्रह्म अधतावत् तिथौअद्य फाल्गुण मासस्य कृष्ण पक्षस्य तिथौ दादस्यां गुरुवारा निवतायां महागण्पतये, कुमाराय श्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्मयै विश्वकर्मणे, द्वारदेवता भ्याः, प्रजापतये ब्रह्मणे कल्शदेवताभ्यः, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवताभ्यांः, चतुवर्देश्वराय सानुचराय मासपतये नारायणाय फाल्गुणे शक्ति सहिताय चाक्रणे,

क्रिया सहिताय गोविन्दाय – दुर्गायै त्रयम्बकाय, वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्निष्वातादिभ्या पितृगण देवताभ्यां, भगवते भवाय देवाय, उग्राय देवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय, ईशवराय देवाय, महादेवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय– देवी पुत्रा वटुक नाथाय, कालरात्रयै, तालरात्रयै, राज्ञरात्रयै, शिवरात्रयै, समस्त शिवरात्रयै, देवताभ्यां, धूपदीपं संकलपातिसिद्धिरस्तु धूपो नमः दीपो नमः।

अपसव्येन बाया यज्ञोपवीत रख कर तिल सहित पानी से पितरों को जल देते, तीन बार पढ़े

नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो नमो धर्माय विष्णवे, नमो यमाय रुद्राय कान्तार पतये नमः। ओम तत्सद् ब्रह्म अध् तावत तिथौ अद्य द्धतर्षन कीजियेत्रः।

पित्रे पितामहाय प्रतिपामहाय। मात्रे पिता महयै प्रपिता महयै समस्त मातापितृभ्यो–द्वादशदैवतेभ्यः पितृभ्यो, धूपस्वधा दीपस्वधा। सव्येन।

दाई भुजा में यज्ञोपवीत धारण कर के विष्ठुर और जल खासू या नारीकचलों में ले कर तिलक और तीन पूष्प डालते हुए पढ़े।

संवः सृजामि ह्रदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टिास्तन्वा सन्तु वाः। संसृष्टा प्राणों अस्तु वा। सम यावः प्रियास्तन्वा सं प्रिया ह्रदयानि वः आत्मा वो अस्तु सं प्रिया सं प्रियसतन्वो मम।।

इसी जल के छीटे वटुकनाथ को दे कर पढ़े

जीवदानं, जीवदानं, जीवदानं परिकल्पयामि नमः

धुप उठा कर घुमाते हुए पढ़े

अश्विनः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। मित्रा वरुणयोः प्राणसतौ ते प्राणं दत्ता। तेन जीव ब्रहस्पतेः प्राणः सते प्राणं ददातु तेन जीव।। समस्त शिवरात्रि देवताभ्यां जीवादानं परिकल्पयामि नमः

अक्षत सहित दर्भ के दो तिनके सीधे पकड़ कर यह मंत्र तीन बार पढ़े

ॐ भू: पुरुषमा वाहयामि नमः।
ॐ भुवः पूरषमा वाहयामि नमः।
ॐ स्वा पुरुषमा वाहयामि नमः।

गायत्री मन्त्र तीन बार पढ़े

ॐ भूर्भवस्वा तत्सवितू वर्रणेयम, भर्गो देवस्य धीमहि दियो यो नः प्रचोदयात –3

ॐ तत्पुरुषाय विद्यमहे, महादेवाय दीमहि तन्नो रुद्रा प्रचोदयात –3

ॐ तत्सद् ब्रह्म अद्य तावत तिथौ अद्य फाल्गुण मासस्य कृष्ण पक्षस्थ तिथौ महापरवनि दादश्यां परतः त्रियोदशा भौम वासरन्वितायां। भगवतः भवस्य देवस्य–शर्वस्य देवस्य, पशुपतये देवस्य, उग्रस्य देवस्य, भीमस्य देवस्य, ईशानस्य देवस्य, महादेवस्य पार्वती सहितस्य परमेश्वरस्य–देवीपुत्र वटुकनाथस्य–कालरात्रयाः

तालरात्रया:, शिवरात्रया: समस्त शिवरात्री देवतानां अर्चामिहं किरिष्ये ॐ कुरुष्व ।।

दर्भ के तिनको को नेरमाल के पात्रा में डालकर तिल, सर्षप और जौ को भी कन्धों के ऊपर से फेंके। अब शंकर मूर्ति के सामने दर्भ के दो 2 तिनके आसन के लिए डालते हुये पढ़े

विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वरेश्वर आसने दिव्यमीशान दास्येहं परमेश्वर।

भगवत: भवस्य देवस्य, ईशानस्य देवस्य महादेवस्य, पार्वती सहितस्य परमेश्वरस्य इदंमासनं नम:

सब बटुक पात्रों के नाम दो दो धर्मकाण्ड डाल कर पढ़े

देवपुत्र वटुक नाथस्य, कालरात्रया: तालरात्रया: शिवरात्रया: समस्त शिवरात्री देवताभ्यां इदंमासनं नम:

चावल सहित दर्भ के दो तिनके अनामिका और मध्यमा पर अगुंठे से दबा कर घण्टी बजाते हुए पढ़े

भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, उग्राय देवाय, पशुपतये देवाय, रुद्राय देवाय, भीमाय देवाय,

ईश्वराय देवाय, महादेवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय, देवीपुत्र वटुकनाथाय कालरात्रये, तालरात्रये, समस्त शिवरात्री देवताभ्यां पुष्मान यूजयामि। ॐ पूजय।

शंकर की मूर्ति पर फूल चढ़ाते हुए पढ़े।

लिग्डंऽद्य भक्तददया क्षणमात्र मेंक स्थानं विधाय भव, मद्धिहितां पुरारे। सर्वेशु! विश्वमय। हृतकमलादिरुढ़। पूजां गृहाण भगवन भवमेऽद्य तुष्टाः।। भगवन पार्वतीनाथ। भक्तनुग्रह कारका। अस्मद्धयानु रोधेन, सन्निघानम कुरु प्रभो।।

दोनों हाथों में फूल भर कर चढ़ाइए। और तीन बार गायत्री मन्त्र का जाप करें। खासु से जलधारा डालते हुए पढ़े।

शनोदेवी रभिषटये-आपो भवन्त पीतये, शमयोरभिस्त्रवन्तुनः

दर्भ, जल, दूध, घी, दही, चावल, जौ, सर्षप यह आठ वस्तु अहर्य कहलाते है, इन सब का खासू में डाल कर यह मन्त्र पढ़ते हुए, यही जल धारा वटुकनाथ पर डालते जाइए।

भगवंतो अर्ध्य मर्ध्यम।। त्रयम्बकेश सदाधार,

विपदां प्रतिघातक अर्घ्यं गृहान देवेश संम्पत्सर्वार्थसाधक।। भगवान भवदेव पार्वती सहित परमेश्वर देवीपुत्र वटुकनाथ, कालरात्रि, तालरात्रि, राज्ञिरात्रि, शिवरात्रि, समस्त शिवरात्रि देवताः इदं वोऽर्घ्यं नमः।

ॐ नमः शिवाय कहते हुए, सारा जल डालते रहिए और कहिए

पंचदश स्नानं परिकल्पयामि नमः।।

देवता पितर इत्यादि के लिए चावल, दही, तिल, शहद और घी सहित जल से तर्पण करते हुए पढ़े।

ब्रह्मा दयादेवास्तृपयन्ताम पितरः–3
तृप्यन्ताम, तृप्यन्ताम, तृप्यन्ताम।

अब दायें अगुँठें तथा तर्जनी से शिवमूर्ति का स्पर्श कर के अपने नेत्रों से लगा कर पढ़े।

भवाय देवाय, उमासहिताय शिवाय,
पार्वती सहिताय परमेश्वराय नेत्रस्पर्शनं नमः।

अब जहाँ शंकर मुर्ति को बिठाना हो, वहाँ फूलों से आसन सजा कर यह पढ़े।

आसनाय नमः, वृषभासनाय नमः, शतदल, पद्मासनाय नमः, सहस्त्रादल पद्मासनाय नमः।

अब स्वर्णवरकों और फूलों की मालाओं से शंकर भगवान और वटुकनाथ को सजा कर – महिम्नापार एंव देवी के श्लोक भक्तिभाव से पढ़े और फूल चढ़ाते जाइए।

ॐ महिम्नापारं ते परम विदुषो यद्ऽसदृशी,
स्तुति ब्रह्मादीनामअपि तदवसन्नस्त्वयि गिराः।
अथावाच्यः सर्व स्वमति परिणामा विधि गृण,
न्ममाप्येष स्तोत्रो हर निरपवादः परिकरः।।

अतीतः पंथानं तव च महिमा वाग्डःमनसयो,
रतद्व्यावृत्या यं चकितमभिधत्ते श्रृति रपि।
सकस्य स्तोतव्यः कतिविध गुणाः कस्य विषयः,
पदे त्वर्वाचीने पतित न मनः कस्य न वचः।।

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत,
स्तव ब्रह्मन्किं वागपि सुरगुरो र्विस्मय पदम।

मम त्वेतां वाणी गुणकथन पुणंयेन भवतः,
पुनामीव्यर्थऽस्मिन पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिताः।।

तर्वश्वर्य यतज्जगदुदयरक्षा प्रलयकृ,
त्रयी वस्तु व्यस्तं त्रिसृषु गुण भिन्नसु तनुष।

अभव्यानामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीं,
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः।।

किमीहः किकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं,
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।

अतर्क्यैश्वर्ये त्वयनवसरदुःस्थो हतधिया,
कुतर्कोऽयं काश्चिन मुखरयति मोहाय जगतः।।

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता,
मधिष्ठातारं किं भवविधिर ना दृत्य भवति।

अनीषो वा कुर्यादभुवन जनने काःपरिकरो,
यतोमन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे।।

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति,
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।

ॐ रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिल नाना पथ जुषां,
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।।

महोक्षः खटवाग्डः परशुरजिनं भस्म फणिन,
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोप्करणम।

सुरास्तां तामृद्धिं दधाति तु भवद भ्रू प्रणिहितां,
न ही स्वात्मारामं विषय मृगतृष्णा भ्रमयति।।

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्व ध्रुवमिदं,
परो ध्रौव्या घौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।

तर्वश्वयं यत्नादयदुपरि विरिन्चिर्हरिरधः,
परिच्छेन्तुं याताव अनलम, अनलस्कन्ध वपुषः।

ततो भक्ति श्रद्धा भरगुरु गृणद्भ्यां गिरिश यत,
स्वयं तस्थे ताभ्यां त्व किमनु वृत्तिर्न फलति।।

अयत्नादासाद्य त्रिभूवनमवैर व्यतिकरं,
दशास्यो यद्बाहूनभृतरणकण्डूपरवशान्।

शिरः पद्मश्रेणी रचित चरणाम्भोरुह बले,
स्थिरा यास्त्व भक्तेस्त्रिपुर हर विस्फूर्जितम इदम्।।

अमुष्य त्वत्सेवा समधिगत सारं भुजवनं,
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रम यतः।
अलभ्या पातालेऽप्येलस चलिता गुष्ठशिरसि,
प्रतिष्ठा त्वऽयासीद ध्रुवमुपचितो मुहिति खलः।।

यदृद्धिं सुत्रम्णो वरद परमोच्‌यैरपि सती,
मधश्चक्रे बाणः परिजन विधेय त्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन्वरिवसितरि तवच्चरणयो,
र्न कस्याप्यून्नेत्यै भवतिशिरसस्त्वऽयव नतिः।।

अकाण्ड ब्रह्माण्ड श्रय चकित देवा सुरकृपा,
विधेयस्या सीद्‌यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
सकल्माषः कण्ठे तव न कुरुतेन श्रियमहो,
विकारोऽपि श्लाध्यो भुवनभय भंग व्यसनिनः।।

असिद्धार्थो नैव कचिदपि सदेवा सुरनरे,
निर्वतन्त्ते नित्यं जगति जयनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितर सुर साधारण भृत,
स्मरः समर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः।।

ॐ महीपादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं, ॐ
ॐ पदं विष्णो र्भ्राम्यदुभुज परिग रुग्णा ग्रहगणम। ॐ
ॐ मुहुदर्यौदौरथ्यं-या-त्यनिभृतजटा ताडित तटा, ॐ
ॐ जगदरक्षायै त्वम नटसि ननु वामैव विभुता।। ॐ
ॐ वियद्व्यापी तारा गणगुणित फेनोद्गमरुचिः, ॐ
ॐ प्रवाहो वारां यः पृषतलधु दृष्टाः शिरसि ते। ॐ
ॐ जगद्द्वीप कारं जलधिवलयं त्येन कृतमि, ॐ
ॐ त्यनेनै वोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः।। ॐ
ॐ रथा क्षोणी यन्ता शतधृतिर गेन्द्रो धुनरथो, ॐ
ॐ रथांगे. चन्द्रार्को रथ चरण पाणिः शर इति। ॐ
ॐ दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरत्रृण आडम्बर विधि, ॐ
ॐ विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रमुधियः।। ॐ
ॐ हरिस्ते साहस्त्रम कमलबलिमाधाय पदयो, ॐ
ॐ यदकोने तस्मिन्निज मुदहरन्नेत्र कमलम। ॐ
ॐ गतोभक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा, ॐ
ॐ त्रयानाम रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्।। ॐ

कृतौ सुप्ते जाग्रत्तमसि फल योगे कृतुमता,
क्व कर्म प्रधवस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अत्सत्वां सम्प्रेक्षय क्रतुषुफलदान प्रतिभुवं,
श्रुतौ श्रद्धां बद्धवा दृढपरिकराः कर्मसु जनः।।

क्रिया दक्षो दक्षः क्रतुपतिर दीशस्तनुभृता,
मृषीणामार्तिवर्ज्यं शरणद सदस्या सुरगणा।
क्रतुभ्रशंस्त्वतः क्रतुफलविधान व्यसनिना,
ध्रुवं कर्तुः श्रदाविधुरंभिचारा येहि मखा।।

प्रजाःनाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं,
गंत रोहिद भूतां रिरमयिषुमृश्यस्य वपुषा।
धनुषपाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं,
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्या धरभसः।।

अपूर्वं लावण्यं विवसनतनोस्ते विमृशतां,
मुनीनां धारानां समजनि सकोपि व्यति कराः।
यतो भगने गुह्ये सकृदपि सपर्या विधदतां,
ध्रुव मोक्षोश्लीलं किमपि पुरषार्थ प्रसविते।।

स्वलावनयाशंसा धृतं धनुष मअह्नाय तृणव,
पुरा प्लुष्टम दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पा युधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यम निरत देहार्ध धटना,
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः।।
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा,
श्चिता भस्मालेपः सृगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमगंल्मं शीलं त्व भवतु नामैवमरिवलं,
तथापि स्मतृणां वरद परमम मंगलमसि।।
मनः प्रत्यक्चिते सविधमवधायात मरुतः,
प्रहृश्य द्रोमाणः प्रमद सलिलोत्संगित दृशः।
यदालोक्यांहलादं ह्राद इव निमज्ज्या मृतमये,
दधत्यन्तस्तत्वं किमपि यमि नस्तत्किल भवान।।
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह,
स्त्वमापस्वम व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमित च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता विभ्रत गिरं,
न विधमस्तत्त त्वं वयमिह तु यत्वं न भवसि।।

त्रयी तिस्त्रो वृतीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा,
नकाराद्यैवर्णैस्त्रिभिरमिदधत्तीर्ण विकृति।

तुरीयं ते धाम ध्वनि भिरवरुन्धानमणुभि,
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पद्म।।

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहाँ,
स्तथा भीमेशानाविति यदभिदानाष्टकमिदम।

अमुष्मिन्प्रत्येक प्रविचरति देव श्रुतिरपि,
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहित न मस्योऽस्मि भवते।।

वपुश्प्रादुर्भावादनमितं मिंद जन्मनि पुरा,
पुरारे नैवाहम क्वचिदपि भवन्तं प्रणतवान।

नमन्मुक्तः संप्रत्यतनु रह मग्रे प्यनतिमान,
महेश क्षन्तव्यं तदिदमपराध द्वयमपि।।

नमो नेदिष्ठाय प्रियंदव दविष्ठाय च नमो,
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।

नमो वर्षिशठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो,
नमः सर्वस्मै ते तदिदमति सर्वाय च नमः।।

बहलरजसे विश्वोत्पतौ भवाय नमो नमः,
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।

जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः,
प्रमहसि पदे निस्त्रैयगुणै शिवाय नमो नमः।।

श्रीपुष्पदंत मुखपकंज निर्गतेन,
स्तोत्रेण किल्बिष हरेन हर प्रियेण।

कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन,
सुप्रीणितो भवति भूत पतिर्महेशः।।

इत्येषा वाग्ंमयी पूजा-श्रीमच्छकंर पादयो,
अर्पिता तेन मे देवा-प्रीयतां मे सदाशिव।।

त्वं तत्व न जानामि-कीदृशोसि महेश्वर,
या दृशोसि महादेव-ता दृशाय नमो नमः।।

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः,
सर्वपाप विनिमुर्क्तः शिवलोके महीपते।।

या देवी सर्वभूतेषू-दया रुपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।

लक्ष्मी वशी करणचर्णसोधरानि,
तत्पादपंकज रजांसि चिरं जयन्ति।
यानि प्रणाममिलितानि नृणां ललाटे,
लुम्पंति दैव लिखितानि दुःर्क्षराणि

सर्वबाधा प्रशमनं त्रैलोकस्य अखिलेश्वरी,
एंवएव त्वया कार्य अस्मत् वैरी विनाशनं।

शंकर पर वस्त्र के रूप में फूल चढ़ा कर पढ़े

कालाग्निरुद्र सर्वज्ञ वरदा भय दायक वस्त्रं गृहाण देवेश दिव्य वस्त्रों पशोभित।। समस्त शिवरात्री देवाताभ्याः वस्त्रं परिकल्पयामि नमः।

फिर यज्ञोपवीत के रूप में पुष्प चढ़ा कर पढ़े

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं-प्रजा पतेर्यत्सहजं पुरस्तातः। आयुष्यमग्रै प्रतिमुंच शुभ्रं-यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः समस्त शिवरात्रि देवताभ्यां यज्ञोपवीतं परिकल्पयामि नमः।।

शंकर की मूर्ति वटुकनाथ और दूसरे पात्रों को तिलक लगा कर शंकर को चन्दन और बाकी पात्रों को सिन्दूर लगाते हुए पढ़े।

त्रिपुरान्तक देवेश पार्वती प्राण वल्लभ गृहान गधं-काश्मीर चन्द्रचन्दन कल्पितम। भगवते भवाय देवाय, महादेवाय, ईशानाय देवाय, उमासहिताय शिवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय, देवी पुत्रा वटुकनाथाय, कालारात्रयै, तालरात्रयै, शिवरात्रयै, समस्त शिवरात्रयै देवताभ्यांः समालभनं गन्धोनमः

तिलक वाली उंगुली को धो कर चावल वेलपत्र और पुष्प चढ़ाइए

सदाशिव शिवानन्द प्रधान करुणेश्वर, पुष्पाणि बेलपत्रादि विचित्राण गृहाणमे, भगवते भवाय देवाय, उमासहिताय शिवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय, देवीपुत्र वटुकनाथाय, कालरात्रयै, तालरात्रयै, शिवरात्री, समस्त शिवरात्री देवताभ्यां, अर्धोनमः, पुष्पों नमः।

खडे हो कर धन्टी बजाते धूप घुमाये।

महादेव मृलानीश, जगदीश निरुन्जन-
धूपं गृहान देवेश साज्ये गुग्गुल कल्पितम।
समस्त शिवरात्रि देवताभ्यां, रत्नदीपं र्कपुरं
परिकल्पयामि नमः

फूल चढ़ा कर।

छत्र परिकल्यापि नमः

दूध कन्द व पुष्प डालते हुये पढ़े।

हरविश्वारि वलाधार निराधार निराश्रय,
पुष्पान्जलिमिमं शम्भो, गृहाण वरदो भव।

मन से आधी परिक्रमा कर लें।

यानि कानि च पापानि, ब्रह्महत्यादि कानि च-
तानि तानि प्रणशयन्ति शिव स्यार्ध प्रदक्षिणात।

समस्त परिवार वटुकनाथ को श्रद्धा से पुष्प चढ़ा कर पढ़े

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्मागंरांगाय
महेश्वराय, देवाधिदेवाय दिगम्बराय तस्मै
नकाराय नमः शिवाय।

मातंग. चरमाम्बर भूषणाय, समस्त गीर्वाण गणर्चिताय, त्रिलोक्यनाथाय पुरान्तकाय, तस्मैमकाराय नमः शिवाय।

शिवां मुखाम्भोज विकासनाय, दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय, चन्द्रार्क वशैवा नर लोचनाय, तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।

वशिषृ कुम्भोत् भवगौतमादि मुनीद्र वन्दयाय, गिरिश्वराय, श्री नीलकण्ठाय वृष ध्वजाय, तस्मै वकाराय नमः शिवाय।

यज्ञस्वरुपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय, नित्याय शुद्धाय निरंजनाय तस्मै यकाराय नमः शिवाय।

ॐ कारं बिन्दु संयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनाः, कामदं मोक्षदं चैव ओंकारं तं नमाम्यहम।

न जातो न मृतो यश्च क्षयो यस्य न विद्यते, नमन्ति देवताः सर्वे नकारम तम नमाभ्यहम।

महादेवं महावक्रं महाध्यानं परायनम,
महापाप हर देवम, मकारं तं नमाम्यहम ।

शिवात्पर तरो नास्ति, शिव शास्त्रेषु निश्चयः,
शमन्त्त सर्व पापानि, शिकारं तं नमाम्यहम ।

वाहनम वृषभो यस्य, वासुकिः कण्ठ भूषणम,
वामे शक्ति धरं देवं, वकारं तं नमाम्यहम ।

यत्र तत्र स्थितो देवः, सर्व व्यापी महेश्वर,
यो गुरु सर्व देवानां, यकारं तं नमाम्यहम ।

ॐ कारं कर्म चक्रेषु, नकारं नाभि मण्डले,
मकारम हृदये देशे, शंकारं कण्ठ भूषणम,

वकारम वक्र मध्ये तु, यकारं ब्रह्म रुध्रगम,
एवं षडक्षरस्तोत्रं या पठेच्छिवसन्नि धौ,
शिवलोकं वाप्नोति शिवेन सहमोदते ।

शंकर स्तुति

हाथ में फूल लें कर के पढ़े

अतिभाषण कटुभाषण यमकिंकर पटली।
कृत ताडन परिपीडन मरणागम समये।

उभयासह मम चेतसि यमशासन निवसन।
शिव शंकर शिवजी शंकर हर मे हर दुरितम।।

अति दुर्नय चटुलेन्द्रिय, रिपुसंचय दलिते।
पवि कर्कश कटु जल्पित, खल गहर्ण चलिते।

शिव या सह मम चेतसि, शशि शेखर निवसन।।
भवभंजन सुररंजन खलवंचन पुरहन्।

दनुजान्तक मदनान्तक रविजान्तक भगवन।
गिरजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्।।

चक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये।
कलिविग्रह भवदुर्गह रिपूदुर्बल समये।।

दिज क्षत्रिय वनिता शिशु दरकम्पिन हृदये।
भव सम्भ्व विविधामय, परिपीडित वपुषं।।

दयतात्मज ममताभर कलुषीकृत हृदयम।
करुमाम निज चरणार्चिन निरतम भव सत्तम।।

शिव शंकर शिवजी शंकर हर मे हर मन्त्रहीनं,
क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्गतम।
त्वया तत्क्षम्यतां देव कृपया परमेश्वर।।

कर चरण कृतं वाक्कायजं कर्मज्मवा, श्रवण,
नयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विदितम विदितम वा सर्वमेतत्क्षमस्त्व।।

जय जय करुणा बदे श्री महादेव शम्भू।
सह ना भवतु सह नौ भनक्तु सहवीर्य कर वावहे।।

तेजिस्वना वदीतं अस्तु मा विद्धुशाहवे।
ओम शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

थाली मे चावल तथा दक्षिणा आदि अपर्ण कीजिए और पढ़िए

एंता देवता सदक्षिणा न्जेन प्रीयन्त्ता प्रीता सन्तु।

वटुकनाथ को फूल चढ़ाकर पढ़े

आत्मा त्वंम गिरजामतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं पूजा ते विषयोप भोग रचना निद्रा समाधिस्थितिः,

सन्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो। यत् यत् कर्म करोमि तत् तत् अखिलं शंकरस्तवाराधनम्।

थाली में वटुकनाथ, डुलिजियो सन्निवारियों तथा श्रृषिंडुलिलजों के लिए अन्न एवं सब्जियों ले कर अन्न आदि डालते 2 पढ़िये।

ये विश्वभाविनो भूता ये च तेष्वऽनुयायिनाः। आहरन्तु बलिं तुष्टाः प्रयक्छन्तु शिवं मम।।

योऽस्मिन्निवसति क्षेत्रो क्षेत्रपालः सकिंक्करः। तस्मै निवेदयाभ्यद्य बलिं पानीयंसमयुक्तं।।

क्षांक्षेत्रदिपतयें बलि नमः, रां राष्ट्रधिपतयें बलिं नमः। सर्वेअभय वर प्रदा महां पुर्ष्टि पुष्टिपतयो ददातु।।

समस्त परिवार के सदस्यों के हेतु नैवेद्य एक थाली में नाम ले ले के परोसे सब सब्जियों आदि भी डालिये चावल की रोटी का भी भाग डालिये

एक थाली मे द्धचोट क्षेत्रपालऋ पक्षियों के लिए अन्न आदि रखिये, नैवेद्य की थाली को समस्त परिवार सदस्य हाथ लगाये रखिये, नैवेद्य द्धप्रेन्युनऋ इस प्रकार कीजिए :-

अमृतभुद्रया अमृतीकृप्य अमृतमस्तु अमृतायतां नैवेद्य सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्नो हस्ताभ्यामा ददे, महागनपतये कुमाराय श्रिये सरस्वत्यै लक्ष्मयै विश्वकर्मणे द्धार देवताभ्यः चातुवर्देश्वराय श्रृतुपतये नारायणाय, दुर्गायै त्रयबकाय, वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्निश्वातादिम्यः पितृगणदेवताभ्यां ॐ भगवते वासुदेवाय, लक्ष्मीसहिताय नाराणाय, भवाय देवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय, विनाकाय, वल्लभासहिताय श्रीगणेशाय क्ली कां कुमाराय, भगवते हां ही सः सुर्याय प्रभासहिताय आदित्याय भगवत्यै आमायै कामायै चार्वग्ड.यै टंकधारिणयै, तारायै, पार्वत्यै, यक्षिणै, श्रीशारिका

भगवत्यै, श्री शारदा भगवतै, महाराज्ञिभवतै, ज्वाला भगवतै, ब्रीढ़ा भगवतै, वैखरी भगवती, गंगाभगवत्यै, यमुनाभगवत्यै, कालिका भगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुर सुन्दर्यै, सहस्त्रनाम्न्यै, देव्यै, भवान्यै, अभयंकरीदेव्यै, क्षेमंकरी भगवत्यै, सर्वशत्रुध्घातिन्यै, इहराष्ट्राधिपतयै, अमुकभैरवाय, इन्द्रादिम्यो दशलोकपालेभ्यः आदित्यादिभ्यो, नवग्रहदेवताभ्या, ब्रह्मध्रुवांभ्यां अनन्तागस्त्याभ्यां, ब्रह्मणे कूर्माय, ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै शिख्यादिभ्यः पंचचत्वारि शिद्धास्तोष्पति यागदेवताम्यः ब्रह्मादिभ्यः मातृभ्यः, गौर्यादिभ्यः मातृभ्यः, ललितादिभ्यः मातृभ्यः, दुर्गाक्षेत्र गणेश्वरदेवताभ्यः, राका देवताभ्यः, त्रिकादेवताभ्यः सिनीवालीदेवताभ्यः यामीदेवताभ्यः, रोद्रीदेवताभ्यः, ॐ भूर्देवताभ्यः ॐ भूवो देवताभ्यः, ॐ स्वर्देवताभ्यः, ॐ भूर्भुस्वर्देवताभ्यः अखण्डब्रह्मडयाग देवताभ्यः, महागायत्रयै,

सवित्रयै-सरस्वत्यै, हेरकादिभ्यः, वटुकादिभ्यः, उत्पन्नमतृत दिव्यं प्राकक्षीरोदधिमन्थनात्, अन्नममृतरुपेण नैवेद्यं, प्रतिंग्रहताम ।

इष्ट देवता का ध्यान करते हुए

तत्सद ब्रह्मअद्यतावाद तिथौअद्य, फाल्गुण मासस्य पक्षस्य, तिथौ आत्मनो वांग्मनः कार्यापार्जितपापनिवारणार्थ, ॐ नमो नैवद्म निवेदामि नमः।

इस के पश्चात सपरिवार खडे हो कर आरती कीजिये आरती पूजा के पश्चात इस लिए की जाती है कि पूजन में जो त्रुटि रह जाती है, आरती से उस में त्रुटियों के रहते हुये भी पूर्णता आती है।

आरती

ओऽम् जै जगदीश हरे, स्वामी जै जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट छिन में दूर करें।।

जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मनका। स्वामी दुख....
सुख सम्पित घर आवे, कष्ट मिटे तन का।।

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी । स्वामी शरण...
तुम बिन और न दुजा, आश करूँ जिसकी ।।

तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी। स्वामी तुम....
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी।।

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता। स्वामी तुम....
मै मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ।।

तुम हो एक अगोचर, सब के प्राणपति । स्वामी सब....
किस विधि मिलू दयामय, तुम को मै कुमति ।।

दीनबन्धु दुःख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे। स्वामी तुम....
अपने हाथ उठाओ, द्वार पडा तेरे ।।

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। स्वामी पाप....
श्रदाभक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ।।

तन, मन, धन जीवन, सब कुछ है तेरा । स्वामी सब....
तेरा तुझ को अर्पित, क्या लागे मेरा ।।

जै शिव ओंकारा, भज जै शिव ओंकारा
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धगी धारा ।।

ओम हर हर हर महादेव,
एकानन चतुरानन पचांनन राजे हंसानन
गरुड़ासन बृषवाहन साजे ।।
ओम हर ......

दो भुज चारु चत्रुर्भुज, दशभुज अति सोहे
तीनो रुप निरखते, त्रिभुवन जन मोहे ।।
ओम हर .

अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी ।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी ।।
ओम हर ......

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे ।
सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे ।।
ओम हर ......

करमध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूल धारी ।
सुखकारी दुखहारी जगपालनकारी ।।
ओम हर ......

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका ।।
ओम हर ......

त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावै
।। ओम हर ......

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्माऽमृतं गमय
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

आइये सपरिवार सुख शान्ति पूर्वक प्रसाद वितरण करे।
शुभचिन्तक आप की